।। निरगुण बोध ग्रंथ ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ निरगुण बोध ग्रंथ लिखंते ||

साखी ||

सुरगण निरगुण बीच मे || अे अरथाँ मध थाय ||
सुरगण सुख सुखरामजी || निरगुण जलम मिटाय ||१||

सगुण व निर्गुण के पराक्रम का यह फरक है कि सगुण इससे माया के सुख मिलेंगे । परन्तु जन्म लेना,मरना नही छूटता व निर्गुण की भक्ती से अमर सुख मिलते व साथ मे जन्म लेना व मरना यह सदा के लिए छूटता । ||१ ||

पिंडत घर जळ कुंभ मे || सेजे संत निवाण ||
जन सुखिया को जीत सी || पिंडत साध सूं आण ||२||

पंडीत का ज्ञान,घर के मटके में भरे हुये पानी समान मटके इतना है । और संत का ज्ञान बड़ी बहती हुयी नदीके पानी के प्रवाह जैसा है । ऐसे अपुरे ज्ञानसे ये पंडीत संतो से कैसे जीतेंगे । || २ ||

पिण्डत धन घर स्हाको || साध द्रब की खाण ||
जन सुखिया किम जीतसी || पिण्डत साध सूं आण ||३||

पंडीत का ज्ञान साहुकार के घर के धन जैसा है । (साहुकार के घर कितना भी धन रहा,तो वह गिनती का रहता है ।)और साधू का ज्ञान द्रव्य की खाण समान है । उस खाण में से कितने भी रत्न निकाले,तो भी उस खाण मे से रत्न समाप्त नही होते है।)वैसे ही ये साधू के ज्ञान,तो रत्नों की समान खाण है,उन्हे पंडीत कैसे जीतेगा? || ३ ||

हर गुरू साधु अेक हे || सब मील ज्ञान सराय ||
सुखिया सुकृत प्रगटे || तब दरसे उर मांय ||४||

हर,गुरू और साधू एक ही है । ऐसा सभी ज्ञानी अपने अपने ज्ञान मे सराते है । परन्तु सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,पहले का कुछ सुकृत प्रगट रहेगा,तब हृदय में गुरू,साधू व हर एक है ऐसा दिखाई देगा । || ४ ||

करम ब्होत करणी घणी || रोग रहयो घट छाय ||
यूं सुखिया नही ऊपजे || राम रटण नर चाय ||५||

(जीवके पीछे)पहलेके बहुतही कर्म लगे हुए है और अभी भी नयी नयी करणीयाँ कर रहे है इस कारणसे,रामजी नही मिल रहे है । जीवोके घटमे यह करणीयोका रोग छाया है । इसकारण राम नाम रटन करने की मनुष्य में चाहना निर्माण नही होती है । || ५ ||

जुर जेम तप पीड़ तेजरी || भोजन बास न स्वाय ||
यूं क्रमा बस सुखरामजी || राम न आवे दाय ||६||

जैसे किसीके शरीर मे,ज्वर रहा,ताप रहा,कोई पीड़ा रही और तिजारा ताप रहा,तो उस मनुष्य को भोजन अच्छा नही लगता है,भोजन तो क्या,भोजन की बास(गन्ध)भी,अच्छी

नही लगती है । तो ऐसे जीव पहले के कर्मो के वश हो गये है । उन्हे राम नाम अच्छा नही लगता है ।६।

धन धीणो हासल नही ।। करे मजूरी जाय ।।
सुध बुध बिन सुखरामजी ।। राम न आवे दाय ।।७।।

जैसे किसी के घर धन नही,दूभता नही और दूसरा कोई भी उत्पन्न नही,तो वह कही भी जाकर मजदूरी ही करेगा । तो ऐसे ही पहले के अच्छे कर्म नही रहने से,मतलब पहले के दुष्कर्मो से समझ और अच्छी बुद्धि नही रहने के कारण,उसके मनको राम नाम लेना अच्छा नही लगता है । || ७ ||

नर पीनस तन रोग हे ।। बास न आवे ताय ।।
जन सुखिया कर कपूर ले ।। दुरी देत बगाय ।।८।।

जैसे मनुष्य को पिन्नसका रोग हुआ,उसको सुगन्धी वस्तु हुयी,तो भी,उसको सुगन्ध आती नही । वह मनुष्य सुगन्धीत पदार्थको दूर फेक देता है । ऐसे ही जिस मनुष्य के पहले के सतस्वरुप ब्रम्ह के अच्छे कर्म नही रहे,तो पिन्नस के रोगवाला,जैसे सुगन्धीत वस्तु फेंक देता है,वैसे ही यह भी राम नामको दूर कर देता है । || ८ ||

चोपाई ।।

प्रथम हम सत संगत कीनी ।। सुध बुध ग्यान अकल सब लीनी ।।
तब हिरदे अेसी दरसावे ।। कहाँ सो जाय कहाँ सूं आवे ।।९।।

सर्व प्रथम हमने सत संगत की । उस सत्संग से हमें सुद्धि(समझ)आयी और सुद्ध(समझ)होने से बुद्धि आयी और बुद्धि आने से ज्ञान और सभी तरह की अकल आयी। तब हृदय में ऐसा दिखाई देने लगा,की मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ? । ।।९।।

कुण सो मरे जनम कुण जाया ।। अे मन मँझ अंदेस उपाया ।।
अेसा भेव भिन्न कर भाखे ।। से समरथ मुझ सरणे राखे ।।१०।।

और इस शरीर में मरता कौन है?और जन्म लेके कौन आया,तथा किसने जन्म दिया?यह मेरे मन में प्रश्न उत्पन्न हुये । इन प्रश्नोका भेद,जो अलग-अलग करके बतायेगा वही समर्थ है । उसी समर्थ के शरण में मै रहुँगा । || १० ||

जुग मे ग्यान सकळ मुझ सूज्या ।। षट दर्शण सब ही ले बूज्या ।।
अष्टांग जोग कोई सांख बतावे ।। हद कूं छाड परे नही जावे ।।११।।

संसार के सभी ग्यान तथा योगी,जंगम,सेवड़ा,सन्यासी,फकीर और ब्राम्हण)इन छःदर्शणोसे मैंने पूछा,तो कोई अष्टांग योग बताता है,तो कोई सांख्य योग दिखाता है । जिससे भी पूछा,वह हद्द को छोड़कर,दूसरी हद के परे की बात नही बताता है । ।।११।।

ऋषी मुनि पण्डत जुग सारा ।। हद ही हद मे करे बिचारा ।।
हद मे काळ निरंतर लूटे ।। जम दावा सूं प्रथन छूटे ।।१२।।

ये ऋषी मुनी और संसार के सभी पंडीत और ये सारा संसार,हद्द के हद्द में ही,विचार करते है व हद्दी में तो काल निरन्तर लूटता रहता है और हद्द के देव और उनके भक्त,यम के दावे से, कभी भी नही छूटते । || १२ ||

सबही अरथ बूज हम लीया || इनते काळ जम नही बीया ||
धरणी ध्यान धरम लग लूटे || सुरगुण सरण हंस नही छूटे ||१३||

ये सभी ही ज्ञान मैंने पूछ लिये साख्य योग,अष्टांग योग और ऋषी मुनीयों के ज्ञान से काल याने यम जरासा भी नही डरता है । यह यम काल ध्यान करनेवाले,धर्म करनेवाले और धर्म का पालन करनेवाले इनको तो यम,काल लूटता । और सगुण देवताओं की तथा अवतारों की शरण लेने से,हंस(जीव)काल,यम से छूटता नही । ||१३||

मै बूजत हूँ अेहे बिचारा || किस बिध हंस जम व्हे न्यारा ||
आवागमन ब्होर नही आवे || से मुझ कूं कोई ज्ञान बतावे ||१४||

तो मैं तुमसे हंस किस प्रकारसे,यम से दूर होगा?व पुन: आवागमन में(जन्म-मरण में)यह नही आयेगा । ऐसा ज्ञान,पुछता हुँ । वह मुझे कोई बतावो । || १४ ||

सुरगुण भक्त बिष्ण कूं साझे || तब लग काळ शीस पर गाजे ||
सांख मत कोई रहे समाई || ने: चे काळ न माने काई ||१५||

जो कोई विष्णू की सरगुण भक्ती साधेगा,तब तक तो काल उसके सिर पर गरजेगा । काल यह स्वयं विष्णू को भी नही छोड़ता है । फिर विष्णु के भक्त को कैसे छोड़ेगा?तो सांख्य योग का मत धारण करके बैठेगा,तो सांख्ययोग का मत धारण करनेवालेका,काल कुछ नही सुनेगा, निश्चय ही उसे मारेगा । || १५ ||

जोग साझ जम कोई जीते || ने: चे काळ करम नही बीते ||
चंद सूर पवन अर पाणी || धर ब्रम्हंड आकास बखाणी ||१६||

कोई योग की साधना करके,यम को जीत लेगा,परन्तु निश्चय ही उसको काल नही छोडेगा । ये योगी तो क्या?परन्तु चन्द्र,सुर्य,वायु,पानी,पृथ्वी और आकाश यह सभी ब्रम्हाण्ड को काल नही छोडता || १६ ||

तीनू देव सक्त ने खावे || जम जोगी के पास न आवे ||
के सुखराम सुणो संत सारा || ब्रम्ह जोग का भेव नियारा ||१७||

तीनों देव(ब्रहा,विष्णू,महेश) और शक्ती को भी काल खा जाता है । परन्तु यह यम सतस्वरुप ब्रम्ह योग साधनेवाले योगीके पास नही आता है । सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि, सभी संतो सुनो । यह सतस्वरुप ब्रम्हयोग साधने का भेद,इस दूसरे सभी योगों से अलग है । || १७ ||

ब्रम्ह जोग साजो तम भाई || आवागवण मिटे दु:ख दाई ||
ऊद बुद रीत ब्रम्ह की होई || बिरळा संत लखे जन कोई ||१८||

तुम भी यह सतस्वरुप ब्रम्हयोगकी साधना करो,यह ब्रम्हयोग साधनेसे आवागमन याने जन्मना -मरना जो बहुत दुख:दायी है,वह मिट जायेगा,यह सतस्वरुप ब्रम्ह की अद्भुत रीती है । इस सतस्वरुप ब्रम्ह की रीती में,कोई बिरलै ही संत समझते है । || १८ ||

सांख जोग नवद्या सूं न्यारा || मन पवना सूं परे बिचारा ||
ब्रम्ह जोग सोही जन साझे || उभे अंक रसणा ले गाजे ||१९||

यह सतस्वरुप ब्रम्हयोग सांख्ययोग नवविद्या भक्ती से भी अलग है । मन व श्वास से भी परे है । यह सतस्वरुप ब्रम्हयोग उन्ही जन(संत)से साधे जायेगा,जो ये दो रा और म अक्षर जीभ से लेकर रटेगें । ||१९||

सेजां सजे ध्यान धुन सारा || रटणा नांव जिभ्या बिस्तारा ||
साझन सोच अेक नही राखे || निस दिन नांव न केवळ भाखे ||२०||

ऐसे राम नाम लेनेवाले का ध्यान व ध्वनी,यह सहजही साधे जायेगा । इस नामका जिव्हा से रटन करने से,यह सभी विस्तार,सहज ही हो जाता है । साधना होने के लिए,एक भी फिकर रखता नही,सिर्फ रात-दिन इस न केवल नाम का,उच्चारण करेगा || २० ||

रटत रटत रसणा लिव लागे || मन सो पवन सुरत ले जागे ||
जागे सुरत सकळ चेतावे || सावधान सब ही होय आवे ||२१||

इस तरह से नाम की रटन करते-करते,रसना से लव लग जायेगी । फिर यही नाम मन,श्वांस और सूरत इसे लेकर,जागृत हो जायेगा । और सूरत जागृत हो जानेपर,यह सूरत सभी को चेतन कर देगी,तब ये सभी मन व श्वांस सावधान होकर आयेगें । ||२१||

तीन लोक मे व्हे व्हे कारा || जब जन चल्या ब्रम्ह के द्वारा ||
दाणू देव सकळ सोई धूजे || सन मुख आया साध कूं पूजे ||२२||

फिर ये जन सतस्वरुप ब्रम्ह के द्वारपर जाने लगेंगे । तब तीनो लोकों में सर्वत्र कोलाहल होने लगेगा । फिर दानव(राक्षस)और सभी देवता(तैतीस कोटी देव)इन संतोसे डरकर काँपने लगेगे । और वे देव तथा राक्षस संतो के सामने आकर,उन संतो की पूजा करने लगेगें ||२२||

हाजर स्हेर सकळ सोई देवा || नव से नार संत सुख सेवा ||
चौबीसु तां माँही बखाणे || तीनू संत सेज सुख माने ||२३||

सभी देवताओंके शहर और उस देवोंके शहरोके देव,उस संतके सामने आकर हाजीर होंगे । नौ सौ नारी(शरीरकी नौ सौ नाड़ीयाँ),सभी उस संत की सेवा करके,संतको सुख देनेवाली होगी । उस नौ सौ नाडीमे,चोबीस नाडी मुख्य है और उसमे की तीन नाडीसे(इडा,पिंगला,सुषमणा से),संत सहज मे सुख भोगते ||२३||

नवसे नार निनाणू बोले || हरषी सबही आतर खोले ||
म्रदंग ताळ जींझ कर लेवे || राग छत्तीस अेक सुर देवे ||२४||

नौ सौ नाड़ीयाँ बोलने लगेगी,नव सौ निन्यानवे नाड़ीयों से,राम नाम की ध्वनी होने लगेगी । ये सभी नाड़ीयाँ हर्षायमान होकर,सभी ही आतुर होकर,एक जैसा कोई मृदुंग,कोई झांझ और टाल हाथ मे लेगें,जैसे छत्तीसही रागिणीयाँ एक स्वर से गायेगी । ।।२४।।

ब्रघू ढोल कोक धुन गाजे ।। भँवर गुँजार पाँख पर बाजे ।।
मुरळी बिन शंख धुन होई ।। डफ जंतर बोले मुख सोई ।।२५।।

बरघू ढोल व कोक(पीतलकी पट्टीका,हाथसे बजानेवाला बाजा)इन सभी की एक ध्वनी होकर, शरीरमें गरजने लगेगी । जैसे बहुतही भँवरे फूलकी पंखुड़ीपर,ध्वनी करके गुंजार करने लगते है । उन सभी भँवरोकी एक ध्वनी हो जाती है,उसी तरह शरीरकी सभी नाड़ीयों की,एक ध्वनी हो जाती है । मुरली,वीणा और शंख इन सबकी मिलकर,एक ध्वनी होती है । वैसी ही शरीर की नाडीयों की,एक ध्वनी होती रहती है । डफ व यंत्र(लकड़ीके दोनों तरफ लौकी और सात–आठ तार लगे रहते है ।) इन सबकी एक ध्वनी होते रहती है । ।। २५ ।।

प्रजा आण हाट व्हे भेळी ।। के कूटे बस्ती गळ छेळी ।।
सूवा मोर बबईया बोले ।। चेती मास कंवळ मुख खोले ।।२६।।

जैसी बाजारमें बहुतसी प्रजा जमा होते है और उन सबका एक ही शोर होकर,एक जैसा सुनाई देता है । बाजारमें बोलनेवाले लोग,तो बहुत रहते है । परन्तु उन सभी बोलनेवालों का शोर, एक होकर जैसा सुनाई देता है,वैसे इस शरीरके नाड़ीयों की,अलग आवाज एक होकर,एक ही सुनाई देती है । केकूटे बस्ती गल छेली । बकरीयोंका झुंड गाँवके पास आकर कोलाहल करता है । तो उस सभी बकरीयोंके झुंडके कोलाहलकी,एकही आवाज होते रहती और जंगलमें तोता, मोर और बबइया(एक छोटा पक्षी होता है),ये सभी बोलते है व चैत्र मासमें कोयल अपना मुख खोलती है,तब इन सभीका,एक ही ध्वनी होता है । ।। २६ ।।

तेरे ताळ मंजीरा बाजे ।। निस दिन शीस अेक धुन गाजे ।।
नारी निरत नाच रंग लावे ।। छप्पन राग छत्तीसूं गावे ।।२७।।

और तेरह ताली के तेरह ताल एकदम बजाने पर,उन तेरहों मंजीरो की एक ध्वनी होती है । वैसी ही इस शरीर में शिर पर एक जैसी ध्वनी गरजते रहती है । इसी प्रकार सिर के उपर दसवें द्वारपर,इन सभी की एक ध्वनी होती रहती है । तब इस शरीर की नौ सौ निन्यानवे नाड़ीयाँ नाचने लगती है और रंग राग करके,रागीणी गाने लगती है और वे छप्पन तरह के रंग राग करके,छत्तीस तरह की रागीणी गाने लगती है । ।।२७।।

जन सुखराम जोग गत भाखूं ।। भिंन भिंन भेद सकळ ले दाखू ।।
जब जोगी तन माय समाया ।। तीन लोक देखन मध आया ।।२८।।

सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि इस योग की गती में बताता हूँ । इस योग का

भिन्न-भिन्न भेद सभी मैं दिखाता हूँ । जब यह योगी शरीर में जाकर समाता है तब इस योग साधने वाले को तीनों लोक (स्वर्ग,मृत्यु ,पाताल) दिखाई देता है । ।।२८।।

चाले इधक भँवरू जोगी ।। तीन लोक माया रस भोगी ।।
बोले बेण संग कर लीया ।। शिर पर बोझ राम गुण दिया ।।२९।।

वह योगी जैसे-जैसे और चलेगा,वैसे-वैसे वह तीनो लोको की माया के,सभी रसों का भोग भोगेगा । और वह मुख से बोलेगा,उसे साथ कर लेगा । तथा राम नाम के गुणों का बोझा उसके सिर पर देगा । ।। २९ ।।

बेगारी कूं पकड मंगाया ।। नारी स्हेत हाजर ले आया ।।
जोगी रोस बहोत बिध कीया ।। मन पवना आगु कर लीया ।।३०।।

और बेगारीको पकड़कर बुलाया,वह बेगारी(शब्द योग),अपनी नारी(सूरत)के साथ आकर हाजीर हो गया । योगी बहुत ही तरह से रोस(राग)किया और मन तथा श्वांस इसे आगे कर लिया । ।। ३० ।।

तीजी सुरत सक्त संग आवे ।। बेगारी शिर हुकम चलावे ।।
जे कोई टळे फुटन की भाके ।। सोझ घेर मुख आगे राखे ।।३१।।

और तीसरी सूरत,यह जबरदस्त साथ में आयी और वह बेगारी के उपर हुकूम चलाने लगी । यदी कोई मन और श्वांस या शब्द अलग होने को कहेगा,या अलग हो गया । उसे खोजकर (पलटाकर),अपने मुख के सामने रखेगा । ।। ३१ ।।

निस दिन करे जाप तो भारी ।। सुन्न सेहर की गेल बिचारी ।।
सबसूं गुष्ट ज्ञान जुं देवे ।। सब पलटाय आप संग लेवे ।।३२।।

और रात-दिन बहुत भारी बंदोबस्त करेगा और शुन्न शहर के(ब्रम्हाण्ड के)रास्ते का विचार करेगा । यह सुरत सभी से बात करके,सभी को पलटाकर अपने साथ लेती है । ।। ३२ ।।

प्रमोदे यूँ नार बिचारी ।। धिंन तुम भाग भयो बेगारी ।।
मुक्त मोक्ष के पंथ सिधावे ।। प्राण पुरूष आगे ले धावे ।।३३।।

और यह सूरत शब्द के योगी को ज्ञान देती है । धन्य तुम्हारा भाग्य,की तुम बेगारी हुए । यह सभी को लेकर मुक्ती के और मोक्ष के रास्ते पर जाने लगती है । तथा प्राण पुरूष को अपने आगे लेकर,चलने लगती है । ।। ३३ ।।

सबही पलट अेक घर आया ।। जोगी प्राण गिगन कूं धाया ।।
समटया सकळ द्वेत बूहारा ।। अेकण अंग संत जन सारा ।।३४।।

ये सभी पलटकर एक ही घर में(त्रिगुटी में)आये और वहाँ से योगी का प्राण गगन की तरफ दौड़ा । वहाँ सभी द्वैतपन का व्यवहार सिमट गया । वे सभी संत जन एक ही स्वभाव के है । (उनमें द्वैतपना कूछ भी नही रहा ।) ।। ३४ ।।

गेली गेल निसो दिन धावे || उठ बेठ सूंतो नही चावे ||
घाटा भाँज मेर कूं मार्‍या || दाणू दुष्ट चोर संघार्‍या ||३५||

गेली(योगके रास्तेसे चलनेवाला योगी),गेल(योगाभ्यासका रास्ता),रात-दिन चलने लगा । वो सतस्वरुप ब्रह्मयोग साधनेवाला,उठना,बैठना और सोना भी नही चाहता है । रास्तेके सभी घाट (इक्कीस मणी)तोड़कर और मोर(इक्कीस गाठोंके उपरकी मणी)इसे भी मारेगा । और रास्तेके दानव(अहंकार,अभिमान,लालच),दुष्ट(काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,मत्सर) और चोर(मान बड़ाई, कपट और संशय)इन सबका संहार किया । || ३५ ||

घाट घाट ब्हो जुध कीया || जीत्या संत पंथ सुध लीया ||
आस पास गढियाँ सब ढाई || लड़ता तके मिल्या सब माही ||३६||

और प्रत्येक घाट-घाट पर बहुत युद्ध किया तथा उन सभीको संतो ने जीतकर,शुद्ध रास्ता पकड़ा। अगल-बगल के सभी गढ़ी या(छोटे किला),(भ्रम,अज्ञान,चिन्ता व वासना) गिरा दिया । फिर जो सामने झगड़ते थे,वे सभी आकर मिल गये । || ३६ ||

रटण फोज आगे कर दीजे || पेला घाट भाँज यूं लीजे ||
दूजे घाट चाल शिर आया || गेब फौज निसाण घुराया ||३७||

यह राम नाम रटन करनेकी फौज,आगे कर दो। और पहला घाट(कंठ स्थान),इस फौज से तोड़ दो। और दूसरे घाटपर(हृदय पर),चलकर आये। वहाँ गेबावु फौज का निशान, गरजने लगा । || ३७ ||

धूजे सकळ भोमिया थरके || ब्हेहे आगा पीछा सरके ||
तीजे घाट राड़ भई भारी || जूँझे सकळ नगर नर नारी ||३८||

सभी काँपने लगे और भोम्या(गाव में के हिस्सेदार),(मान,गर्व,गुमान,झूठ,मैपन)थर्राने लगे और आगे होकर,पीछे सरकने लगे। और तीसरे घाट पर (नाभी स्थान पर),बहुत भारी लढ़ाई हुयी। उस नगरी के सभी स्त्री-पुरूष लड़ने लगे । || ३८ ||

जब सिंधु संत सूर दिराया || चढी चोट भेलू गढ काया ||
मन चित्त पवन गेहे लीया || छेद पयाळ पिछम कूं दीया ||३९||

जब शूरवीर संतो नें सिंधू(वाणी का ज्ञान)दिया,तब सभी चढ़कर ज्ञान की चोट मारकर,काया के(शरीर के)गढ़पर चढ़ गये । मन,चित्त,श्वांस और सूरत इन चारों को भरकर,एक जगह किए । ये फिर नीचे के गुदा घाट वगैरे स्थानों का छेदन करके,पश्चिम दिशा का(बंकनाल का) रास्ता लिए ।। ३९ ||

ब्रम्ह जोग क्रिया में भाखूँ || भक्त जोग हिरदे धर राखूं ||
दसदा भक्त भेद यूं लीजे || आन देव बदला मे दीजे ||४०||

मैं सतस्वरुप ब्रम्हयोग की क्रिया बताता हूँ और सतस्वरुप भक्ती योग हृदय में पकड़कर रखा हूँ । दसविद्या भक्ती का(प्रेम भक्ती का)भेद ऐसे लो और अन्य देव सभी,इस

दशविधा भक्ती के बदले में दे दो । (छोड़ दो) ।। ४० ।।

भाँजी भोम पटा सब लीया ।। हरिजन राज अेक कूं दीया ।।
पूरब जीत पिछम को आया ।। पाँच जोध संग ले धाया ।।४१।।

भांजी भोम सभी पृथ्वीका भंग करके,यह ऐसा पट्टा लिया। और एक हरीजनको(मुझे) राज्य दिया। पूरब दिशा(कंठ,हृदय,नाभी,ब्रम्ह,स्थान,गुदाघाट स्थान)जीत कर,पश्चिम दिशा को(बंकनालमें)आया और पाँच योद्धा(शब्द,सूरत,मन,पवन और बुद्धि)साथ में लेकर चला ।४१।

समज्या मार्ग संत कूं दीजे ।। सन मुख राड़ आण संत लीजे ।।
पिछम देस जोरावर होई ।। कागद पतर न माने कोई ।।४२।।

जो समझे हुए थे,वे संतो को रास्ता दो,ऐसा बोले और संतो के सन्मुख आकर लड़ाई लो । यह पश्चिम देश जबरदस्त है । यह कागज पत्र नही मानता है। (जैसे बादशाह राजा पर कागज पत्र देता है,या राजा किसी गाँव के ठाकुर पर,कागज पत्र हुकूम देता है। उसी तरह से हुकूम पालन करता है और कोई हुकूम की अदुली करता है। इसी तरह से पश्चिम दिशा जबरदस्त है,यह कागज पत्र नही मानता है ।) ।। ४२ ।।

जब संत सूर किया दळ भेळा ।। पूरब पिछम अेक घर मेळा ।।
मन की तोफ सुरत ले दागे ।। गोळा नांव गडी सो लागे ।।४३।।

तब संतो ने दल(ज्ञान,विश्वास,शिल,संतोष,सबर,विचार,विज्ञान,वैराग्य)ऐसी शूरवीर फौज जमा की,तब पूरब और पश्चिम का,एक ही घर में मेल हुआ । फिर मन की तोप सूरत ने दागी। उस तोप मे का नाम का गोला,गढ़ी पर लगा ।।।४३ ।।

पडिया ताव पिछम दळ भागा ।। हरिजन जाय मेर सूं लागा ।।
एकबिसू गढ कोट उडाया ।। तब संत शिरे त्रिगुटी आया ।।४४।।

ऐसा शब्द का ताव पड़ने से,पश्चिम के सभी दल भाग गये। इसी तरह से हरीजन(मैं) जाकर मेरू में पहुँचा। मेरू दंड के इक्कीस स्वर्ग व गढ़ कोट(किला)उड़ाकर पार हो गया । तब मैं सिर पर त्रिगुटी में आया। ।। ४४ ।।

पुरब देस पिछम हुवा सूना ।। चवदे क्रोड़ जम मिल रूना ।।
ध्रमराय का देस उजाड़्या ।। गढ सो कोट किल्ला सब पाड़्या ।।४५।।

इस प्रकार से सारा पूर्व और पश्चिम देश सूना(उजाड़)हो गया। तब सभी चौदह कोटी यम मिलकर रोने लगे। और धर्मरायका देश उजाड़ कर दिया। धर्मराय के सभी गढ़ कोट(रहने का मकान)और किले सभी(राम नाम के गोलेसे और मन की तोप से गिरा दिया। ।।४५।।

पाँच पचीस तीन नव तेरे ।। उलटा आण त्रिगुटी टेरे ।।
तब थिर राज चले नही कोई ।। दुष्मण पलट सेण सब होई ।।४६।।

पाँच(इन्द्रीयाँ),पच्चीस(प्रकृती)और तीन ताप(आधी,व्याधी,उपाधी)और नौ(तत्व)तेरा

(त्रिगुटी के आगेके तेरह लोक),ये उलटकर आकर,त्रिगुटीमें पुकार करने लगे। तब सभी राज्य स्थिर हो गये,कोई चलायमान नही होता। जो दुष्मन थे,वे सभी सज्जन हो गये ।।४६।।

सिंघासण जन जाय बिराजे ।। नोपत सुरू निसो दिन गाजे ।।
प्याला फिऱ्या अमीरस पीया ।। बेरी सेण आप दिस लीया ।।४७।।

जब मैं सिहांसन पर(त्रिगुटी पर)जाकर बैठा,तब नौपत बजनी शुरू हो गयी । वह नौपत रात-दिन गरजने लगी । और (बैरी से मेल होने के बदले),वहाँ अमृत के प्याले पिने लगे, उसमे से अमृत प्राशन किया। बैरी और सज्जन सभी को,मैंने अपनी तरफ लिया।। ४७ ।।

तीना के सब मांही मिलाया ।। अे सब पलट अेक मे आया ।।
जागी जोत भया उजियाळा ।। इण बिध साधु भया निराळा ।।४८।।

इन सभी को,तीनो में मिलाया,वे सभी एक में आ गये । आगे ज्योत जागृत होकर,उजाला हो गया । इस तरह से मैं अलग हुआ । ।। ४८ ।।

आपही आप ओर नही कोई ।। जा संग नार रमे मिल दोई ।।
दोई तज अेकण मे आया ।। ज्या निज ब्रम्ह पास नही माया ।।४९।।

वहाँ मैं ही था,मेरे अलावा वहाँ दूसरा कोई नही था । वहाँ दो स्त्रीयाँ(इडा,पिंगड़ा)साथमें खेलने लगी । दोनों छोड़कर(इड़ा,पिंगड़ा)एक में(सुषमना में)आया । तब निज ब्रम्ह(मैं ही ब्रम्ह) हो गया । फिर माया मेरे पास नही रही । ।। ४९ ।।

ज्यांहाँ सुखराम हुवे जन भेळा ।। माया ब्रम्ह सेज का मेळा ।।
सुख दु:ख ब्यापे नही कोई ।। उण घर संत बिराजे सोई ।।५०।।

जहाँ सभी संत जमा होते है । वहाँ माया ब्रम्ह का,सहज ही मेल होता है । वहाँ माया का सुख और काल का दु:ख,किसी भी प्रकार का मालुम नही होता है । उस घर में जाकर,सभी संत विराजमान होते है । ।। ५० ।।

।। इति निरगुण बोध ग्रंथ संपूरण ।।